an>

Title: Need to give Gorakhpur University the status of Central University.

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं एक अत्यन्त लोक महत्व के विषय की तरफ आपका और आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

देश की आजादी के बाद प्रथम विश्वविद्यालय गोरखपुर यूनीवर्सिटी 57 साल पहले स्थापित हुयी। आज इस गोरखपुर यूनीवर्सिटी से अलग होकर पूर्वांचल जौनपुर यूनीवर्सिटी बन गयी, फैजाबाद यूनीवर्सिटी बन गयी। यह बौद्ध परिपथ पर अकेला विश्वविद्यालय है, जो श्रावस्ती को जोड़ता है, कपिलवस्तु को जोड़ता है, पिपरहवा को जोड़ता है, कुशीनगर को जोड़ता है। योगी आदित्य नाथ जी सदन में उपस्थित हैं। उस यूनीवर्सिटी के कम से कम 15-17 मेंबर ऑफ पार्लियामेंट सौभाग्य से इस पार्लियामेंट में हैं। पिछले दिनों आदित्य नाथ जी और हम सारे लोग मिलकर भारत के शिक्षा मंत्री, एच.आर.डी. मिनिस्टर से भी कह चुके हैं कि आज उसको केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाना चाहिए।

यह देश के महत्वपूर्ण और प्राचीन विश्वविद्यालयों में से एक है। वहां पर अभी तक कोई बुद्धिस्ट स्टडी सर्किल नहीं बन पाया है, जबकि बौद्ध धर्म के मानने वाले देश और दुनिया के जो तमाम लोग आते हैं, तो उन्हें यूनीवर्सिटी के रूप में केवल गोरखपुर यूनीवर्सिटी मिलती है। जब वहां बुद्ध पर कोई रिसर्च करने जाते हैं, शोध करने जाते हैं तो जो पिपरहवा से खुदाई की चीजें निकली हैं, वे सब कोलकाता के नेशनल म्यूजियम में रखी हुयी हैं। मैं समझता हूं कि आज उनको भी कठिनाई हो रही है, जो बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग हैं, आज बुद्ध के साहित्य के रूप में जो शोध का कार्य हो सकता है, वह भी नहीं हो रहा है। मैं समझता हूं कि इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। गोरखपुर विश्वविद्यालय जो अभी राज्य के अंतर्गत है और अपना विकास नहीं कर पा रहा है, उसको केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए भारत सरकार कार्रवाई करे।

माननीय सभापति :

योगी आदित्यनाथ अपने आपको श्री जगदम्बिका पाल जी के विषय के सम्बद्ध करते हैं।